प्रतिवेदन

भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान एवं श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि, दिल्ली

के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

द्वादश दिवसीय उमास्वातिकृत तत्त्वार्थसूत्र राष्ट्रीय कार्यशाला

(दिनांक 03.12.2017 से 14.12.2017)

उमास्वाति रचित तत्त्वार्थसूत्र में जिनागम के मूल तत्त्वों को बहुत ही संक्षेप में निबद्ध किया है। इसमें कुल दश अध्याय और 344 या 357 सूत्र हैं। संस्कृत-भाषा में सूत्रशैली में लिखित यह पहला सूत्रग्रन्थ है। इसमें करणानुयोग, द्रव्यानुयोग और चरणानुयोग का सार समाहित है। इसकी सबसे बड़ी महत्ता यह है कि इसमें साम्प्रदायिकता नहीं है। अतएव यह श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही सम्प्रदायों में समानरूप से मान्य है। इसकी महत्ता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि दोनों ही सम्प्रदायों के महान् आचार्यों ने इस पर टीकाएँ लिखी हैं। वर्तमान में इसे जैन परम्परा में वही स्थान प्राप्त है, जो हिन्दू धर्म में 'भगवद्गीता', इस्लाम में 'कुरान' और ईसाई धर्म में 'बाइबिल' को प्राप्त है।

इस सूत्रग्रन्थ में मुख्यरूप से सात पदार्थों का विवेचन आया है। तत्त्वार्थसूत्र में ज्ञान, ज्ञय और चारित्र का समान रूप में विवेचन आया है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के समुच्चय को मोक्ष मार्ग कहा गया है। इसमें दस अध्यायों की परिकल्पना करके प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अध्याय में जीव, पंचम अध्याय में अजीवतत्त्व, छठें और सातवें अध्याय में आस्रव एवं व्रत, आठवें में बन्ध, नवम अध्याय में संवर और निर्जरातत्त्वों का एवं दशम अध्याय में मोक्षतत्त्व का विवेचन है।

प्रथम अध्याय के आरम्भ में सम्यग्दर्शन का स्वरूप और उसके भेदों की व्याख्या करने के पश्चात् ज्ञान-विषयक चर्चा का प्रारम्भ होता है। नय का विवेचन इस ग्रन्थ का अपना वैशिष्ट्य है। सकलग्राही ज्ञान को प्रमाण और वस्तु के एक अंश को ग्रहण करनेवाले ज्ञान को नय कहते हैं। तत्त्वार्थसूत्र में ज्ञान को ही प्रमाण माना है और ज्ञान के पाँच भेद बतलाये हैं - 1. मति, 2. श्रुत, 3. अवधि, 4. मन:पर्यय और 5. केवलज्ञान। प्रमाण के दो भेद हैं - प्रत्यक्ष और परोक्ष। उक्त ज्ञानों में मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो परोक्ष हैं। शेष तीन ज्ञान प्रत्यक्ष हैं। मति, श्रुत और अवधिज्ञान के मिथ्या होने के कारण का भी विवेचन कर नयों के भेद परिगणित किये गये हैं।

द्वितीय अध्याय में जीवतत्त्व का कथन किया है। जीव के स्वतत्त्वरूप पंच भावों और उनके भेदों का निरूपण आया है। जीव के संसारी और मुक्त भेद बतलाकर संसारी जीवों के भेद-प्रभेदों का कथन किया गया है। जीवों की इन्द्रियों के भेद-प्रभेद, उनके विषय, संसारी जीवों में इन्द्रियों की स्थिति, मृत्यु और जन्म के बीच की स्थिति, जन्म के भेद, उनकी योनियाँ, जीवों में जन्मों का विभाग, शरीर के भेद, उनके स्वामी एवं पूरी आयु भोगकर मरण करने वाले जीवों का कथन किया है।

तृतीय अध्याय में अधोलोक और मध्यलोक का वर्णन आया है। सात पृथ्वियों तथा उनका आधार बतलाकर उनमें नरकों की संख्या और नरकों में बसनेवाले नारकी जीवों की दशा एवं उनकी दीर्घ आयु बतलायी गयी है। मध्यलोक के वर्णन में द्वीप, समुद्र, पर्वत, नदियाँ एवं क्षेत्रों का वर्णन करने के पश्चात् मध्यलोक में निवास करने वाले मनुष्य और तिर्यंचों की आयु भी बतलायी गयी है।

चतुर्थ अध्याय में ऊर्ध्वलोक या देवलोक का वर्णन किया गया है। इसमें देवों के विविध भेदों, ज्योतिर्मण्डल तथा स्वर्गलोक का वर्णन है।

पंचम अध्याय में जीव पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल इन छः द्रव्यों का वर्णन आया है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक द्रव्य के प्रदेशों की संख्या, उनके द्वारा अवगाहित क्षेत्र और प्रत्येक द्रव्य का कार्य आदि बतलाया है। पुद्गल का स्वरूप बतलाते हुए उसके भेद, उनकी उत्पत्ति के कारण, पौद्गलिक बन्ध की योग्यता-अयोग्यता आदि का कथन है। सत्, द्रव्य, गुण, नित्य और परिणाम का स्वरूप प्रतिपिादित कर काल को भी द्रव्य बतलाया है।

षष्ठ अध्याय में आस्रवतत्त्व का स्वरूप, उसके भेद-प्रभेद और किन-किन कार्यों के करने से किस-किस कर्म प्रकृति का आस्रव होता है, इसका प्रतिपादन है।

सप्तम अध्याय में व्रत का स्वरूप, उसके भेद, व्रतों को स्थिर करनेवाली भावनाएँ, हिंसादि पाँच पापों का स्वरूप, सप्त शील, सल्लेखना, प्रत्येक व्रत और शील के अतिचार, दान का स्वरूप एवं दान के फल में तारतम्य होने के कारण का कथन है।

अष्टम अध्याय में कर्म-बन्ध के मूल हेतु बतलाकर उसके स्वरूप तथा भेदों का विस्तारपूर्वक कथन करते हुए आठों कर्मों के नाम, प्रत्येक कर्म की उत्तरप्रकृतियाँ, प्रत्येक कर्म के स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध का स्वरूप बतलाया है।

नवम अध्याय में संवर का स्वरूप, संवर के हेतु, गुप्ति, समिति, दश धर्म, द्वादश अनुप्रेक्षा बाईस परीषह, चारित्र और अन्तरंग तथा बहिरंग तप के भेद बतलाये गये हैं। ध्यान का स्वरूप, काल, ध्याता, ध्यान के भेद एवं पाँच प्रकार के निर्ग्रंथ साधुओं का वर्णन आया है।

दशम अध्याय में केवलज्ञान के हेतु, मोक्ष का स्वरूप, मुक्ति के पश्चात् जीव के उर्ध्वमन का दृष्टान्तपूर्वक सयुक्तिक समर्थन तथा मुक्त जीवों का वर्णन किया है।

इस प्रकार तत्त्वार्थसूत्र का वर्ण्य विषय जैनधर्म के मूलभूत समस्त सिद्धान्तों से सम्बद्ध है।

भोगीलाल लहेरचन्द प्राच्यविद्या संस्थान एवं श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वादश दिवसीय उमास्वाति (उमास्वामि) कृत तत्त्वार्थसूत्र पर राष्ट्रीय कार्यशाला (03 दिसम्बर, 2017 से 14 दिसम्बर, 2017) आयोजित हुई। इस कार्यशाला में उमास्वातिकृत तत्त्वार्थसूत्र के दस अध्यायों का सूत्रानुसारी अध्ययन कराया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अध्येताओं में तत्त्वार्थसूत्र के माध्यम से जैनधर्म के अध्ययन की ओर अभिरुचि जागृत करना एवं मूल ग्रन्थों के अध्ययन की ओर प्रेरित करना था। तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन से जैन ज्ञान मीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा तथा जैन लोक के स्वरूप का भली-भांति ज्ञान हो जाता है तथा जैन विद्या क्षेत्र में गम्भीर अध्ययन की पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है।

कार्यशाला के आरम्भ में ग्रन्थ के मुख्य प्रतिपाद्य के साथ ग्रन्थ एवं ग्रन्थकार से सम्बन्धित परिचय भी कराया गया। इसमें ग्रन्थ का महत्त्व, ग्रन्थकार जीवन परिचय, गुरु, काल, कृतित्व, श्वेताम्बर-दिगम्बर संस्करण की मुख्य विशेषताओं आदि का परिचय कराया गया। यह कार्यशाला जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म-दर्शन के क्षेत्र में कार्य करने वाले अध्येताओं के साथ-साथ जैन विद्या का ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक लोगों के लिए भी उपयोगी रही।

इस राष्ट्रीय कार्यशाला में 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें एसोसिएट प्रोफेसर, पीएच्.डी., एम. फिल उपाधि प्राप्त एवं शोध छात्र सम्मिलित हुए। दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, पाण्डुचेरी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान परिसर, तिरुपति, मद्रास विश्वविद्यालय, चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, कैम्ब्रिज (यू.के.) तथा फरीदाबाद से प्रतिभागी आये।

कार्यशाला में प्रातः साढ़े नौ बजे से पांच बजे तक प्रतिदिन चार व्याख्यान - कुल 44 व्याख्यानों के माध्यम से तत्त्वार्थसूत्र के दस अध्यायों का अध्ययन कराया गया। कार्यशाला के अन्तिम दिन 14 दिसम्बर को सभी प्रतिभागियों ने पाठ्य ग्रन्थ से एक-एक विषय को चुनकर उस पर अपना पत्र प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के शिक्षकगण -

सं.	नाम	शिक्षण संस्थान	
1.	प्रो. जितेन्द्र बी. शाह	निदेशक, एल. डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद	
2.	प्रो. धर्मचन्द जैन	संकाय प्रमुख एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर	

3.	प्रो. वीरसागर जैन	संकाय प्रमुख एवं अध्यक्ष, जैनदर्शन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	
4.	प्रो. अशोक कुमार सिंह	बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली	
5.	पं. केतन भाई शाह	अहमदाबाद	

कार्यशाला के प्रतिभागीगण –

सं.	नाम	संस्था	विशेष	
1.	डॉ. कुलदीप कुमार	श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	एसोसियेट प्रोफेसर, जैनदर्शन विभाग	
2.	रवि	श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	शोधच्छात्र (जे.आर.एफ.), जैन दर्शन	
3.	विपुल शिव सागर	चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ.प्र.	शोधच्छात्र (जे.आर.एफ.), संस्कृत	
4.	यशवंत कुमार त्रिवेदी	जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	शोधच्छात्र (जे.आर.एफ.), संस्कृत	
5.	देबाशीष अग्रवाल	राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान परिसर, तिरुपति	शोधच्छात्र (जे.आर.एफ.), संस्कृत	
6.	मनीष कुमार गुप्ता	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	शोधच्छात्र (जे.आर.एफ.), अंग्रेजी	
7.	खुशबु कुमारी जैन	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	शोधच्छात्रा (जे.आर.एफ.), संस्कृत	

8.	स्वस्ति शर्मा	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	शोधच्छात्रा (जे.आर.एफ.), संस्कृत	
9.	रेशमा भन्साली	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	एम.फिल छात्रा, जैन दर्शन	
10.	उर्मिला एम. प्रभात	कैम्ब्रिज, इंग्लैण्ड	एम. ए., जैन दर्शन	
11.	स्वधा सिन्हा	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	एम. ए., दर्शन	
12.	ज्योत्सना एम राठौड	मद्रास विश्वविद्यालय	एम. ए., जैन दर्शन	
13.	मीनू बेतल	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	एम.फिल, छात्रा, जैन दर्शन	
14.	पूजा जैन	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	एम. ए., जैन दर्शन	
15.	पूर्वी जैन	मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई	एम.फिल, छात्रा, जैन दर्शन	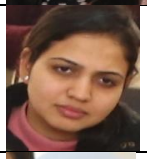
16.	डॉ. साध्वी संगीतश्री जी	दिल्ली		
17.	साध्वी सिद्धश्री जी	दिल्ली		
18.	श्रीमती सुनीता जैन	फरीदाबाद, हरियाणा		
19.	लीना जैन	दिल्ली		

उद्घाटन समारोह

उमास्वातिकृत तत्त्वार्थसूत्र पर राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक *3 दिसम्बर, 2017* को हुआ। इसमें श्री लालबहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के माननीय कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, नई दिल्ली ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं अध्यक्षीय उद्बोधन से आयोजन को गरिमा प्रदान की। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. शुगनचन्द जैन, प्रेसिडेंट, इण्टरनेशनल समर स्कूल फॉर जैन स्टडीज ने अपने वक्तव्य में जैन धर्म की ऐतिहासिकता एवं जैन धर्म के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला।

उद्घाटन समारोह का आरम्भ डॉ. मोहन पाण्डेय के णमोकार महामंत्र पाठ एवं सरस्वती वंदना से हुआ। संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने कार्यशाला के उद्देश्य एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने तत्त्वार्थ सूत्र के अध्ययन-उपक्रम को प्रतिवर्ष आयोजित करने हेतु संस्थान के प्रबन्ध मण्डल एवं विजय वल्लभ स्मारक के न्यासियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यशाला के आयोजन के सम्बन्ध में प्रो. अशोक कुमार सिंह ने प्रकाश डाला। संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. शुगन चन्द जैन

प्रो. गयाचरण त्रिपाठी एवं अतिथिगण

कार्यशाला में प्रतिभागीगणों द्वारा प्रस्तुत पत्र -

सं.	नाम	विषय
1.	डॉ. कुलदीप कुमार	रत्नत्रय का स्वरूप
2.	रवि	जैनदर्शन में जीव
3.	विपुल शिव सागर	जैन परम्परा में मोक्ष
4.	यशवंत कुमार त्रिवेदी	नय की अवधारणा
5.	देबाशीष अग्रवाल	तत्त्वार्थसूत्र में देवलोक
6.	मनीष कुमार गुप्ता	जैन परम्परा में मध्य लोक
7.	खुशबु कुमारी जैन	मतिज्ञान की अवधारणा
8.	स्वस्ति शर्मा	तत्त्वार्थसूत्र में ध्यान
9.	उर्मिला एम. प्रभात	तत्त्वार्थसूत्र में प्ररूपित पुद्गल
10.	स्वधा सिन्हा	तत्त्वार्थसूत्र में अवधि ज्ञान का स्वरूप

11.	ज्योत्सना एम राठौड	निक्षेप सिद्धान्त
12.	पूजा जैन	व्रत परम्परा का स्वरूप
13.	डॉ. साध्वी संगीतश्री जी	जैन परम्परा में सम्यग्दर्शन
14.	साध्वी सिद्धिश्री जी	अष्ट प्रवचन माता (सन्मतिगुप्ति का स्वरूप)
15.	श्रीमती सुनीता जैन	द्वादश श्रवकाचार व्रत
16.	लीना जैन	परिषह की अवधारणा

पत्र वाचन –

श्रीमती उर्मिला प्रभात

श्री यशवंत त्रिवेदी

डॉ. कुलदीप कुमार

समापन समारोह

अपराह्ण 14 दिसम्बर को कार्यशाला के समापन समारोह का शुभारम्भ सरस्वती वंदना से हुआ। श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि के महासचिव श्री नरेन्द्र कुमार जैन जी ने समारोह की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि प्रो. जितेन्द्र भाई शाह ने बताया कि तत्त्वार्थसूत्र कार्यशाला आयोजित करने का विचार कई वर्षों से चल रहा था। हमें अपार हर्ष है कि पूज्य आचार्यश्री नित्यानन्द जी म. सा. की प्रेरणा से वल्लभ स्मारक ने उदारतापूर्वक सहयोग कर इसे मूर्त रूप प्रदान करने में सहायता की। तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन से आगमों में प्रवेश हो जाता है और आगे गम्भीर अध्ययन का भी मार्ग प्रशस्त हो जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों को सभी परम्पराओं के मूल ग्रन्थों के अध्ययन एवं शोध हेतु प्रेरित किया। कार्यशाला में प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत पत्र-वाचन के स्तर की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुये उन्होंने कहा कि इससे पता चलता है कि प्रतिभागियों ने विषय को अच्छी तरह से ग्रहण किया है। इससे कार्यशाला में कराये गये अध्यापन के गम्भीर प्रयास का भी पता चलता है।

इस अवसर पर श्री आत्मवल्लभ जैन स्मारक शिक्षण निधि के मंत्री श्री अशोक जैन ने वल्लभ स्मारक की गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत किया।

डॉ. धनेश जैन, उपाध्यक्ष, बी.एल.आई.आई. ने अध्यापन के समय प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत जिज्ञासाओं की सराहना की और कहा कि परस्पर संवाद से कार्यशालाओं का स्तर ऊँचा होता है। उनके द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र तथा दो पुस्तकें – सूक्ति त्रिवेणी- संपा. आचार्य अमरमुनि एवं परसूईंग डेथ- ले. डॉ. ए. सत्तार, प्रदान की गईं।

संस्थान के निदेशक प्रो. गयाचरण त्रिपाठी ने कार्यशाला की आयोजन व्यवस्था एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला एवं प्रतिभागियों से तत्त्वार्थसूत्र के अध्ययन की निरन्तरता बनाये रखने का आह्वान किया। प्रतिभागियों की ओर से डॉ. कुलदीप कुमार एवं श्रीमती उर्मिला प्रभात ने कार्यशाला के सम्बन्ध में अपना प्रतिभाव में अध्यापन एवं व्यवस्था की प्रशंसा की।

प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, निदेशक, बी. एल. इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। समारोह का संचालन एवं कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण प्रो. अशोक कुमार सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया। समारोह में श्री अशोक जैन, श्री शुभकान्त जैन, कु. अनुपमा भारद्वाज एवं समाज के गणमान्य जन उपस्थित थे।

प्रो. जितेन्द्र भाई शाह

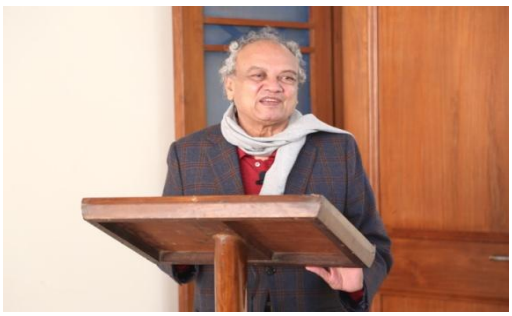

डॉ. धनेश जैन

श्री अशोक जैन

व्याख्यान-कक्ष

समूह चित्र तत्त्वार्थसूत्र कार्यशाला, 14 दिसम्बर, 2017

माननीय श्री नरेन्द्र कुमार जैन, श्री शुभकान्त जैन, श्री अशोक जैन, प्रो. जे.बी. शाह, प्रो. गयाचरण त्रिपाठी, प्रो. अशोक कुमार सिंह, प्रतिभागीगण आदि

***